B.A. (Hons) Part II
Philosophy - Paper III
Topic नीतिशास्त्र का स्वरूप

Dr. Sachidanand Prasad.
Department of Philosophy.
R.R.S. College, Motihari.

नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र का एक प्रमुख अंग है जिसमें नैतिक चेतना के विषयों का अध्ययन किया जाता है। इसमें उचित, अनुचित, शुभ, अशुभ, धर्म अधर्म इत्यादि का विचार नीतिशास्त्र में किया जाता है। मानव आचरण का मूल्यांकन भी इन्हीं विचारों के द्वारा किया जाता है। किसी विषय का वास्तविक स्वरूप तभी जाना जा सकता है जब हम यह जान लें कि वह विज्ञान है या कला। सबसे पहले हम यह जानने की ~~कोशिश~~ कोशिश करेंगे कि क्या नीतिशास्त्र एक कला है।

मनुष्य के मन में दो शक्तियाँ होती हैं — ज्ञानशक्ति और सृजनात्मक शक्ति। सृजनात्मक शक्ति के द्वारा ही मनुष्य कोई रचना करता है। जैसे भाषा, चित्रकारी, संगीत। जिस

(3)

विषय से किसी रचना के नियमों का ज्ञान होता है उसे कला कहते हैं। जैसे संगीत एक कला है क्योंकि उसमें संगीत के नियम बताये जाते है जिसे सीखकर मनुष्य गायक बनता है। इस अर्थ में नीतिशास्त्र को कला नहीं कहा जा सकता है क्योंकि नीतिशास्त्र में केवल जीवन के वास्तविक ~~उद्देश्य~~ आदर्श तथा मनुष्य की नैतिक प्रकृति की विवेचना होती है। फिर कला का अर्थ है किसी व्यवहार में निपुणता क्योंकि एक कलाकार वही होता है जो किसी व्यवहार में निपुण हो। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि एक नीतिशास्त्र का ज्ञानी किसी आचार के नियम का पालन करता ही हो।

अब हम इस विषय पर विचार करेंगे कि क्या नीतिशास्त्र एक विज्ञान है। विज्ञान की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।

(1) विज्ञान मनुष्य को केवल ज्ञान देता है, कुछ करने की विद्या नहीं सिखलाता है।

(2) विज्ञान किसी विषय का सुव्यवस्थित

अध्ययन है।

(3) विज्ञान में निरीक्षण, वर्गीकरण, कल्पना, परीक्षण इत्यादि विधियों का प्रयोग किया जाता है।

(4) विज्ञान द्वारा Universal ज्ञान प्राप्त होता है, किसी वस्तु विशेष का ज्ञान नहीं।

नीतिशास्त्र में विज्ञान के लक्षण देखने को मिलता है। नीतिशास्त्र में आचार नियम अथवा जीवन के आदर्श का ज्ञान होता है।

विज्ञान की तरह नीतिशास्त्र में नैतिक दृष्टि से आचरण का सुव्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। फिर नैतिक ~~नि~~ नियमों के विमर्श में निरीक्षण, कल्पना, वर्गीकरण इत्यादि सभी विधियों का प्रयोग किया जाता है। नीतिशास्त्र हमें सामान्य ज्ञान देता है।

नीतिशास्त्र एक आदर्श निर्देशक विज्ञान है क्योंकि इसमें यह बतलाया जाता है कि मानव आचरण कैसा होना चाहिए। फिर नीतिशास्त्र एक सैद्धान्तिक विज्ञान है क्योंकि इसमें आदर्श आचरण का ज्ञान होता है। लेकिन कोई सिद्धान्त किसी व्यवहार पर ही आधारित होता है इसलिए कुछ विद्वानों ने इसे व्यवहारिक भी कहा है।